Answers to RHA/Set-1

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*ii*) (घ) कथन 1, 2 और 4 सही हैं।

(*iii*) (क) विज्ञान की देन को रचनात्मक कार्यों में उपयोग करना।

(*iv*) मानव विज्ञान के अनुग्रह से सभी प्रकार की सुविधाओं और संपदाओं पर अधिकार प्राप्त कर चुका है। यातायात एवं संचार के साधनों के विकास से समय और स्थान की दूरियाँ बहुत कम हो गई है। कृषि और उद्योग के क्षेत्र में उत्पादन की तीव्र वृद्धि होने के कारण आज दुनिया धन-धान्य से संपन्न हो गई है। शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में तो विज्ञान ने क्रांति ही ला दी है।

(*v*) विज्ञान वरदान के साथ-साथ अभिशाप भी है। हाल के वर्षों में विज्ञान के कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। चीन द्वारा बार-बार परमाणु बम गिराने की धमकी देना, तालिबानियों द्वारा अपनाए जाने वाले हथियारों से अफ़गानिस्तान पर कब्ज़ा करना आदि इसके अनेक उदाहरण हैं।

2. (*i*) (क) कथन 1 और 2 सही हैं।

(*ii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iii*) (घ) ऊँचे पर्वत

(*iv*) उपर्युक्त काव्यांश में कवि ने प्रलयंकारी मेघ, बादल के नर्तन, सागर की गर्जना आदि बाधाओं का वर्णन किया है। ये बाधाएँ कवि के मार्ग में बाधा नहीं बन सकती अर्थात् कवि हर बाधा का सामना करते हुए आगे बढ़ने को दृढ़संकल्प है।

(*v*) अगर व्यक्ति में साहस और दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो उसे कोई भी बाधा उसके उद्देश्य से विचलित नहीं कर सकती। वह हर मुश्किल का सामना करते हुए जीवन पथ पर आगे बढ़ता जाएगा और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर लेगा।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) यह जो बालसुलभ हँसी है, इसी में कई यादें बंद हैं।

(*ii*) जो अंदर से पोली होती है, विशेषण उपवाक्य

(*iii*) संयुक्त वाक्य

(*iv*) लेनिन रोटी के सूखे टुकड़ों को स्वयं नहीं खाता था और दूसरों को खिला दिया करता था।

(*v*) मिश्र वाक्य

4. (*i*) हालदार साहब के द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

(*ii*) भाववाच्य

(*iii*) सैनिकों ने शत्रुओं को हराया।

(*iv*) कर्तृवाच्य

(*v*) बालगोबिन भगत द्वारा मधुर गीत सुनाया गया।

5. (*i*) अकर्मक क्रिया, आदरार्थक बहुवचन, पुल्लिंग, भूतकाल

(*ii*) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, अधिकरण कारक

(*iii*) रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'होने लगा' क्रिया की विशेषता बताने का कार्य

(*iv*) गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन, 'फाँकें' विशेष्य।

(*v*) संबंधबोधक अव्यय, पूजा-पाठ और राम-राम के बीच संबंध प्रकट कर रहा है।

6. (*i*) उत्प्रेक्षा अलंकार

(*ii*) मानवीकरण अलंकार

(*iii*) अतिशयोक्ति अलंकार

(*iv*) उपमा अलंकार

(*v*) रूपक अलंकार

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (क) कथन 1 और 2 सही हैं।

(*ii*) (ग) केवल कथन 4 सही है।

(*iii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iv*) (घ) आत्मा और परमात्मा का

(*v*) (ग) वे मृत्यु को आनंद का विषय मानते थे।

8. (क) उन्होंने ऐसा इसलिए किया होगा, क्योंकि नवाब साहब अपने को श्रेष्ठ समझते थे। किसी सफ़ेदपोश नागरिक के सामने खीरा खाने में उन्हें शर्म महसूस हो रही होगी। नवाब दिखावा तो यही कर रहे थे कि खीरा एक साधारण खाद्य-पदार्थ है और उसे खिड़की से बाहर फेंककर अपनी रईसी का झूठा प्रदर्शन कर रहे थे। इससे उनके अहंकारी स्वभाव तथा प्रदर्शन की भावना का पता चलता है।

(ख) मन्नू भंडारी के पिता महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे। वे धुन के पक्के थे। इसी महत्वाकांक्षा के कारण उन्होंने धनाभाव में रहते हुए भी विषयवार शब्दकोश को पूरा किया। वे यश और प्रतिष्ठा के प्रति सजग थे। वे बच्चों की शिक्षा के प्रति सजग थे इसलिए वे आठ-दस विद्यार्थियों को अपने घर रखकर पढ़ाया करते थे, जिनमें से कुछ ऊँचे ओहदे पर प्रतिष्ठित हुए थे। वे कोमल संवेदनशील थे इसलिए समाज-सुधार तथा राजनीति से जुड़े थे। ये उनकी सभी विशेषताएँ मुझे अच्छी लगीं।

(ग) मुहर्रम से बिस्मिल्ला खाँ का गहरा संबंध था। वे मुहर्रम के ग़मज़दा माहौल में शोक मनाते थे। बिस्मिल्ला खाँ इन दिनों दिल से न तो शहनाई बजाते और न किसी कार्यक्रम में शिरकत करते थे। वे दाल मंडी से आठ किलोमीटर दूरी तक नौहा बजाते हुए पैदल जाते थे। हज़रत इमाम हुसैन और उनके परिवार के लोगों की शहादत में उनकी आँखें नम रहती थीं।

(घ) मेरे विचार से मन के शुद्ध भाव संस्कृति हैं। इनमें मानवीय मूल्यों, जैसे– परोपकार, सहिष्णुता, दया, करुणा तथा धैर्य का समावेश होता है। हमारे रहन-सहन, खान-पान एवं वेश-भूषा का परिचय सभ्यता के द्वारा मिलता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृति आंतरिक वस्तु है, जबकि सभ्यता बाहरी।

9. (*i*) (ग) कथन 2 सही है।

(*ii*) (क) गोपियाँ, उद्धव

(*iii*) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(*iv*) (ग) वह प्रजा को नहीं सताए।

(*v*) (ग) कथन 3 सही है।

10. (क) कवि 'आत्मकथ्य' लिखने को ही विडंबना मानते हैं क्योंकि ईमानदारी से आत्मकथ्य लिखने का अर्थ है कि दूसरे लोगों के छल- कपटपूर्ण व्यवहार का पर्दाफ़ाश करना। सच्चाई एवं ईमानदारी से अपने जीवन का सार लिखने से उन सभी व्यक्तियों की कलई खुल जाएगी, जिन्होंने छल-कपट एवं विश्वासघात से कवि के जीवन का गागर रिक्त कर दिया। इससे कवि की अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदारी एवं निष्ठा संबंधी गुणों का पता चलता है।

(ख) 'अट नहीं रही है' कविता में फागुन मास में प्रकृति में एक नया निखार आ जाता है। इसका सौंदर्य रंग-बिरंगे फूलों, पत्तों व हवाओं में दृष्टिगोचर होता है। फागुन की सुंदरता और उल्लास चारों तरफ़ दिखाई पड़ता है। कवि की आँखें फागुन की सुंदरता से अभिभूत हैं इसलिए वह इस पर से नज़रें हटा नहीं पाता।

(ग) बच्चे की मुसकान बहुत भोली, सरल व निश्छल होती है। यह हमारे तन-मन में उमंग व उत्साह का संचार करती है। बच्चों की मुसकान सहज व स्वाभाविक क्रिया है, जो कठोर-से-कठोर हृदय को भी पिघला देती है।

(घ) संगतकार मुख्य गायक के निराश, निरुत्साहित तथा थक जाने पर उसका साथ देता है। वह झिझकते से स्वरों में मुख्य गायक का साथ देता है। मुख्य गायक के स्वर से अपने स्वर को नीचा रखकर वह उसकी महत्ता को प्रतिष्ठित करता है तथा मुख्य गायक का प्रभाव बढ़ाता रहता है।

11. (क) लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र के विषय में ऐसी धारणा है कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने से सभी पाप धुल जाते हैं। यह जानकर जब लेखिका ने घूमते हुए चक्र को देखा तो उन्हें लगा कि धर्म के संबंध में इस देश के लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक हैं। पहाड़ी लोग प्रेयर व्हील में आस्था रखते हैं, तो मैदानी लोग गंगास्नान, तीर्थाटन, जप, व्रत आदि में विश्वास रखते हैं, अतः इस संबंध में पूरे भारत की आत्मा एक-सी ही प्रतीत होती है।

(ख) लेखक को जापान जाने का अवसर मिला। वहाँ उन्होंने वह अस्पताल भी देखा जहाँ रेडियम-पदार्थ से आहत लोग वर्षों से कष्ट में थे। पर प्रत्यक्ष अनुभूति के अभाव में उन्होंने कुछ नहीं लिखा। एक दिन अचानक सड़क पर घूमते हुए उन्होंने देखा कि एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया है। उन्होंने कल्पना की कि विस्फोट के दौरान कोई खड़ा रहा होगा और विस्फोटक किरणों ने उसे भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इतिहास को यह दृश्य उनके अंतर्मन में कौंध गया और अचानक एक दिन उन्होंने हिरोशिमा पर कविता लिख डाली।
इस आधार पर हम कह सकते हैं कि लेखक को उनके लेखन में प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा आत्मानुभूति अधिक मदद की है।

(ग) इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक ने समाज में बुजुर्गों की निरंतर हो रही उपेक्षा की ओर संकेत किया है। यह सत्य है कि आधुनिक समाज में बुजुर्गों के सम्मान व देखरेख में कमी आई है। परिवार में सदस्यों की संख्या कम होने और समयाभाव के कारण लोग अपने घर के बुजुर्गों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते जिस कारण वे अपने आपको उपेक्षित महसूस करते हैं। लोग अपने सीमित संसाधनों को व्यय करते समय बच्चों की शिक्षा आदि को प्राथमिकता देते हैं जिस वजह से बुजुर्गों को अभावपूर्ण जीवन जीना पड़ता है।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. **(क) मानव जीवन में कर्म का महत्व**

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जीवन कर्म प्रधान है। मनुष्य को किसी भी प्रकार की सफलता और असफलता का विचार किए बिना अपने कर्तव्य का पालन करना पड़ता है तथा आशा व निराशा का भाव लाए बिना निरंतर कार्यरत रहना पड़ता है। जीवन में अनेक बार ऐसा होता है कि हम किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करते हैं किंतु वह पूरा नहीं हो पाता। ऐसा होने पर हमें हमारा परिश्रम व्यर्थ लगने लगता है और हम निराश होकर हिम्मत हार जाते हैं। लेकिन हमें अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयत्न करना चाहिए जब तक कि वह प्राप्त न हो जाए। श्रीमद्भगवद्गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने उपदेश देते हुए कहा है कि हमें केवल कर्म करने में आसक्ति रखनी चाहिए, कर्म के फल में नहीं। यदि कोई कार्य सच्चे मन से, लगन से और पूरी भावना से प्रारंभ किया जाता है तो देर से ही सही लेकिन सफलता जरूर मिलती है।

(ख) वर्तमान युग : डिजिटल युग

वर्तमान समय डिजिटल का युग है। वर्तमान समय में इंटरनेट संचार क्रांति का सशक्त माध्यम बन चुका है। भारत में केवल शहर ही नहीं गाँवों के कोने-कोने तक यह माध्यम अपनी पहुँच बढ़ा चुका है। इंटरनेट ने समस्त मानव जाति में एक अनोखा परिवर्तन ला दिया है। इंटरनेट का सबसे बड़ा लाभ शिक्षा, उद्योग जगत-चिकित्सा तथा बैंकिंग सेक्टर के साथ-साथ और भी कई अन्य रूपों में सामने आया है। आज हम खुद से हजार मील दूर बैठे लोगों से वीडियो कॉल के माध्यम से क्षण भर में बात कर पाते हैं। यह सब इंटरनेट की देन है। आज हम जिस ऑनलाइन शिक्षा का लाभ उठा पा रहे हैं वह भी इंटरनेट की ही देन है। ऑनलाइन गेमिंग और ऑनलाइन शॉपिंग जैसी अन्य कई एप्पस इंटरनेट की बेहतरीन सर्विस के कारण ही लोगों में लोकप्रिय और प्रचलित हैं। आज इंटरनेट की सुविधा ने हमें कई तरह से वैश्विक गतिवधियों से जोड़ा है जिसके दूरगामी प्रभाव उज्ज्वल प्रतीत होते हैं।

(ग) **भारत विविधताओं का देश**

भारत विविधताओं वाला देश है। यहाँ के हर एक प्रांत में विविधता देखने को मिलती है। पूर्व से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिणी सीमा तक भाषायी विविधता से लेकर रहन-सहन, भौगोलिक विविधता और आर्थिक विविधता सहित वेशभूषा में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। भारत के सभी राज्य इन्हीं विविधताओं को अपने भीतर समेटे हुए हैं। भारत का प्राकृतिक स्वरूप भी अत्यंत मनमोहक है। उत्तर में हिमालय की हिमखंडित चोटियाँ, तीन ओर से चरण पखारता सागर, गंगा-यमुना जैसी पवित्र नदियाँ भारत के सौंदर्य की परिचायक हैं। यहाँ की छह ऋतुएँ समय-समय पर भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपने सौंदर्य का प्रदर्शन करती रहती हैं। यहाँ विभिन्न प्रकार की संस्कृतियों का संगम देखने को मिलता है। भारतीय संस्कृति हमारी एकता व अखंडता का परिचायक है। भारत के सभी राज्यों की अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है और सभी का अपना विशेष महत्व है। भारत के सभी राज्यों में विभिन्न धर्मों और जातियों के होने पर सभी की भाषा, बोली, खान-पान और रहन-सहन में विविधता देखने को मिलती है। अतः कहा जा सकता है कि भारत विविधताओं वाला देश है। इन्हीं विविधताओं के कारण यह विश्व में अपना एक अद्‌वितीय स्थान रखता है।

13. (क) सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

अ०ब०स० विद्‌यालय

नई दिल्ली

दिनांक : 10.अप्रैल, 20xx

विषय—विद्‌यालय में कंप्यूटरों की संख्या बढ़ाने के संबंध में।

महोदय

सविनय निवेदय है कि मैं आपके विद्‌यालय की कक्षा दसवीं 'अ' की छात्रा हूँ। मैं आपका ध्यान अपने स्कूल में हो रही कंप्यूटरों की कमी की ओर दिलाना चाहती हूँ।

हमारे विद्‌यालय में कंप्यूटरों की संख्या विद्‌यार्थियों की संख्या की अपेक्षा बहुत कम है जिसके कारण हम सभी की कंप्यूटर की शिक्षा की समुचित व्यवस्था नहीं हो पा रही है। इससे हम सभी विद्‌यार्थियों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। आप इस तथ्य से भलीभाँति परिचित होंगे कि आज के युग में कंप्यूटर शिक्षा कितनी अधिक उपयोगी है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कंप्यूटर का प्रयोग किया जाता है तथा नौकरियों में भी उसी व्यक्ति को अधिक प्राथमिकता दी जाती है जिसको कंप्यूटर का ज्ञान होता है।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि आप इस दिशा में गंभीरतापूर्वक विचार करें तथा शीघ्रातिशीघ्र कंप्यूटर सिस्टम की उचित व्यवस्था कराने की कृपा करें। मैं और विद्‌यालय के सभी छात्र-छात्राएँ इस कार्य के लिए आपके आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद।

भवदीय

वैशाली

अथवा

(ख) परीक्षा भवन

अ०ब०स०

दिनांक : 20 अगस्त, 20xx

सप्रेम नमस्कार

मैं यहाँ पर कुशलता से हूँ। आशा है तुम भी सकुशल होंगे। अनुज ने मुझे फोन पर बताया कि तुम्हारा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली बैडमिंटन चैंपियनशिप प्रतियोगिता में चयन नहीं हो पाया। मैं समझ सकता हूँ कि इस समय तुम्हारी मनोस्थिति कैसी होगी और तुम पर क्या बीत रही होगी। पर मित्र निराश मत होना क्योंकि इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। तुम्हारी तबीयत इतनी खराब हो गई थी कि तुम ठीक से चल-फिर भी नहीं पा रहे थे। ऐसे में तुम कर भी क्या सकते थे। डॉक्टरों ने तुम्हें अभ्यास करने से भी मना कर दिया था। केवल आराम करने की सलाह दी थी। बीमारी से उठने के बाद कमजोरी अधिक होने से तुम बैडमिंटन का अभ्यास नहीं कर पाए। जो थोड़ा बहुत अभ्यास किया वह इस बड़ी प्रतियोगिता के लिए पर्याप्त नहीं था।

तुम अपनी हिम्मत और हौसला बनाए रखो। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम फिर से मेहनत करके और कठिन अभ्यास करके आगामी बैडमिंटन चैंपियनशिप में अवश्य सफलता प्राप्त करोगे।

अब नई आशा और विश्वास के साथ फिर से अपनी तैयारी में जुट जाओ।

तुम्हारा मित्र

वैभव

14. (क) प्रशिक्षित स्नातक कंप्यूटर शिक्षक पद के लिए स्ववृत्त

नाम – दिव्यांश कुमार
पिता का नाम – अरुण कुमार गुप्ता
माता का नाम – आशा गुप्ता
जन्म तिथि – 12 अप्रैल, 19xx
वर्तमान पता – अ०ब०स० नगर, दिल्ली
स्थायी पता – उपर्युक्त
मोबाइल नं० – 9738xxxxxx
ई-मेल – gupta@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2012	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई., दिल्ली	अंग्रेज़ी, हिंदी, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान,	प्रथम	85%
2.	बारहवीं कक्षा	2014	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई., दिल्ली	अंग्रेज़ी, गणित, अकाउंट्स, अर्थशास्त्र, बी०एस०टी०	प्रथम	87%
3.	बी०कॉम०	2017	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	अर्थशास्त्र, बैंकिंग, गणित, कंप्यूटर सांइस	प्रथम	89%
4.	एम०सी०ए०	2019	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	कंप्यूटर	प्रथम	75%
5.	बी०एड०	2021	दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, शिक्षा मनोविज्ञान	प्रथम	68%

अनुभव

• अ०ब०स० पब्लिक स्कूल, रोहिणी, दिल्ली में कंप्यूटर शिक्षक के पद पर एक वर्ष से कार्यरत।

उपलब्धियाँ

• स्नातक तीनों वर्षों में प्रथम श्रेणी के लिए पुरस्कृत।

• विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए निर्धारित विशेषताएँ मुझमें हैं। मैं पूरी निष्ठा के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित।

दिव्यांश

20 मार्च, 20xx

अथवा

(ख)

प्रेषक	:	abc@gmail.com
प्राप्तकर्ता	:	xyz@gmail.com
प्रतिलिपि (सीसी)	:	pqr@gmail.com
गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी)	:	abc@gmail.com

विषय : पी०जी०टी० प्रतियोगिता परीक्षा का प्रवेश-पत्र डाउनलोड न हो पाने के संदर्भ में।

महोदय,

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि मैंने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड के द्वारा आयोजित की जाने वाली पी०जी०टी० प्रतियोगिता परीक्षा के लिए आवेदन किया था। आयोग द्वारा परीक्षा तिथि घोषित की जा चुकी है। यह निर्देश हुआ था कि परीक्षा से एक सप्ताह पूर्व तक परीक्षा का प्रवेश पत्र आयोग की साइट पर जाकर डाउनलोड करें। मैंने दिए गए निर्देशानुसार अनेक बार परीक्षा प्रवेश-पत्र डाउनलोड करने की कोशिश की परंतु मेरा परीक्षा प्रवेश पत्र डाउनलोड नहीं हो पा रहा है। कृपया आप उचित मार्गदर्शन करें और मेरी समस्या का उचित समाधान करें।

धन्यवाद सहित।

भवदीय

प्रियदर्शन

15. (क)

बाढ़ग्रस्त लोगों की सहायतार्थ सामग्री एकत्रित करने हेतु शिविर का आयोजन

विवरण इस प्रकार है–

स्थान– अ०ब०स० विद्यालय परिसर,
य०र०ल० नगर, दिल्ली

दिनांक – 20 जून, 20xx

समय– प्रातः 8:30 बजे से शाम 4:00 बजे तक

वस्त्र, भोजन सामग्री एवं अन्य किसी भी प्रकार से अपना योगदान दे सकते हैं।

संपर्क करें– 92xxxxxxxx

अथवा

(ख)

संदेश

दिनांक : 10 नवंबर, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

प्रिय मित्र,

आपको तथा आपके परिवार को दीपावली के पावन पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ। यह पर्व आप सबके लिए ढेर सारी खुशियाँ और सुख-समद्धि लेकर आए। आप सभी हमेशा स्वस्थ रहें, खुश रहें, ईश्वर से यही मेरी कामना है।

तुम्हारा मित्र

क०ख०ग